

क्या क़ुरआन मुहम्मद ने लिखा था?

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख सबूत इस्लाम सत्य है पवित्र क़ुरआन की प्रामाणिकता और संरक्षण](#)

श्रेणी: [लेख पवित्र क़ुरआन पवित्र क़ुरआन की प्रामाणिकता और संरक्षण](#)

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 05 Sep 2022

क़ुरआन की रचना किसने की? किसी ने इसे बनाया होगा! आखिर इतिहास में कतिने रेगसितान के लोग आगे आये हैं और दुनिया को क़ुरआन जैसी कतिब दी है? कतिब में पछिले राष्ट्रों, पैगंबरों और धर्मों के साथ-साथ उस समय अनुपलब्ध सटीक वैज्ञानिक जानकारी का अद्भुत विवरण है। इन सबका स्रोत क्या था? अगर हम क़ुरआन के दैवीय स्रोत को नकार दें, तो हमारे पास कुछ ही संभावनाएं बचती हैं:



- पैगंबर मुहम्मद ने इसे खुद लिखा था।

- उन्होंने इसे किसी और से लिया था। अगर ऐसा है तो उन्होंने इसे या तो एक यहूदी या एक ईसाई या अरब में वदिशियों में से किसी एक से लिया होगा। मक्कावासियों ने उन पर यह आरोप नहीं लगाया कि उन्होंने इसे उनमें से किसी एक से लिया है।

ईश्वर की ओर से एक संक्षिप्त प्रतिक्रिया:

"और वे कहते हैं, 'ये पुराने लोगों की लिखी हुई चीज़ें हैं जिन्हें ये नक़ल करता है और वो उसे सुबह और शाम सुनाई जाती है। ऐ पैगंबर इनसे कहो, 'इसे उसने उतारा है जो आकाश और पृथ्वी के हर राज जानता है। वास्तव में वह बड़ा माफ़ करने वाला और दया करने वाला है।" (क़ुरआन 25:5-6)

उनके वरिधियों को यह अच्छी तरह से पता था कि उनके बीच पले-बढ़े मुहम्मद ने अपने जन्म के समय से कभी पढ़ना या लिखना नहीं सीखा था। वे जानते थे कि उसने किससे मतिरता की और वह कहाँ गया था; उन्होंने उसे 'अल-अमीन', विश्वसनीय, भरोसेमंद, ईमानदार कहकर उसकी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी को स्वीकार किया।^[1] केवल उनके उपदेश के प्रतिद्वेष में उन्होंने उन पर आरोप लगाया - और फिर वे कुछ भी सोच सकते थे: उन पर एक जादूगर, एक कवि और यहां तक कि एक धोखेबाज होने का आरोप लगाया गया था! वे नरिणय नहीं ले सके कवि क्या हैं। ईश्वर कहता है:

"देखो, वे तुम्हारी तुलना कैसे करते हैं, परन्तु वे भटक गए हैं, इसलिए उन्हें कोई रास्ता नहीं मलित है।" (कुरआन 17:48)

बस ईश्वर जानता है कि आसमान और जमीन पर क्या है, वह अतीत और वर्तमान को जानता है, और सत्य को अपने पैगंबर को बताता है।

क्या मुहम्मद इसे लिख सकते थे?

यह असंभव है कि मुहम्मद कुरआन लिख सकते थे, जिसके कारण नमिनलिखित हैं:

पहला, कई ऐसे मौकों आये जहां वह रहस्योद्घाटन को गढ़ सकते थे। उदाहरण के लिए, पहला रहस्योद्घाटन आने के बाद, लोग और अधिक सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन पैगंबर को महीनों तक कुछ भी नया रहस्योद्घाटन नहीं आया। मक्का के लोग उनका यह कहकर मजाक उड़ाने लगे कि, 'उसके ईश्वर ने उसे छोड़ दिया है!' 93वें अध्याय, अद-दोहा, के आने तक यह चलता रहा। पैगंबर मजाक को समाप्त करने के लिए कुछ भी बोल सकते थे और इसे नए रहस्योद्घाटन के रूप में प्रस्तुत कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके अलावा उनकी पैगंबरी के दौरान, कुछ पाखंडियों ने उनकी प्यारी पत्नी आयशा पर बदचलन होने का आरोप लगाया। पैगंबर उसे आरोप से मुक्त करने के लिए आसानी से कुछ भी गढ़ सकते थे, लेकिन उन्होंने कई दिनों तक इंतजार किया, सभी दिनों दर्द, उपहास और पीड़ा में बतिए, फिर की ओर से रहस्योद्घाटन हुआ और उनकी पत्नी को आरोप से मुक्त किया गया।

दूसरा, कुरआन के भीतर आंतरिक प्रमाण हैं कि मुहम्मद इसके लेखक नहीं थे। कई छंदों में उनकी आलोचना की गई है, और कभी-कभी कड़े शब्दों में कहा गया है। एक धोखेबाज पैगंबर खुद को कैसे दोष दे सकता है जबकि ऐसा करने पर उसका सम्मान खो सकता है और उसके अनुयायियों का अनुसरण करना बंद कर सकते हैं? यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

"ऐ पैगंबर! तुम क्यों उस चीज़ को नहीं करते जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए वैध की है, क्या इसलिए की तुम अपनी पत्नियों की खुशी चाहते हो? और ईश्वर माफ़ करने वाला और दयालु है।" (क़ुरआन 66:1)

"...उस समय तुम अपने दिल में वो बात छपिाए हुए थे जसिं ईश्वर बताना चाहता था, आप लोगों से डर रहे थे, हालांकि ईश्वर इसका ज्यादा हक़दार है क़िआप उससे डरो..." (क़ुरआन 33:37)

"यह पैगंबर और उन लोगों के लिए उचित नहीं है की वो बहुदेववादियों के लिए माफ़ी की दुआ करें, भले ही वे रश्तेदार क्यों न हो, जबकि उनको ये पता चल गया है क़ि वे नरक में जायेंगे।" (क़ुरआन 9:113)

"और जो खुद तुम्हारे पास ज़्जान के लिए दौड़ा आता है, और वह ईश्वर से डर रहा होता है, तुम उसकी उपेक्षा करते हो। हरगज़ि नहीं, ये तो एक नसीहत है।" (क़ुरआन 80:8-11)

यदि उन्हें कुछ छपिाना होता तो वह इन छंदों को छुपाते, परन्तु उन्होंने ईमानदारी से सुनाया।

"और वह [मुहम्मद] अनदेखी चीज़ों के ज़्जान का धारक नहीं है। और यह [क़ुरआन] शैतान के शब्द नहीं है जसिं स्वर्ग से निकाल दिया गया है। तो फिर तुम लोग कहां जा रहे हो? यह और कुछ नहीं बल्कि टिनिया वालों के लिए नसीहत है।" (क़ुरआन 81:24-27)

पैगंबर को नमिनलखिति छंदों में आगाह कया गया, शायद चेतावनी दी गई:

"ऐ पैगंबर हमने ये कतिाब सच के साथ उतारी है ताकि ईश्वर ने जो सीधा रास्ता आपको दिखाया है उसके अनुसार आप लोगों के बीच फैसला करो। और धोखेबाजों की पैरवी न करो। और ईश्वर से क़्षमा मांगो, ईश्वर बड़ा माफ़ करनेवाला और दयालु है। और उन लोगों की पैरवी न करो जो खुद को धोखा देते हैं। वास्तव में ईश्वर ऐसे लोगों को पसंद नहीं करता जो पापी और धोखेबाज होते हैं। ये लोग इंसानों से अपने बुरे इरादे और काम छपिा सकते हैं, लेकिन ईश्वर से नहीं छपिा सकते। ईश्वर तो उस समय भी उनके साथ होता है जब वो रातों में छपिकर उसकी मर्ज़ी के खिलाफ सलाह करते हैं। और ईश्वर हमेशा उनके द्वारा कएि गए कार्यों को अपने दायरे में लिए हुए है। यहां आप हैं जो इस सांसारिकि जीवन में उनकी पैरवी करते हैं - लेकिन क़यामत के दिन उनके लिए ईश्वर से कौन पैरवी करेगा, आखिरि वहां इनका वकील कौन होगा? और अगर कोई गलत काम कर ले या खुद पर जुल्म कर ले और फिर ईश्वर से माफ़ी मांगे तो वह पाएगा की ईश्वर बड़ा माफ़ करने वाला और दयालु है। और जो कोई भी पाप करता है वह खुद के लिए बुरा करता है। और ईश्वर को सब बातों की खबर है। यदि कोई व्यक्ति अपराध या पाप करके उसे दूसरे नरिदोष व्यक्तिपर थोप दे, तो उसने सबसे बड़ा और खुला पाप कया है। और यदि तुम पर ईश्वर की कृपा और उसकी दया नहीं होती तो इनमे से एक समूह

ने तुम्हें बहकाने का नश्चिचय ही कर लिया था। परन्तु वे अपने सविा कसिी और को नहीं बहका रहे थे और तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं कर सकते थे। और खुदा ने तुम पर कतिाब और हकिमत उतारी और तुम्हें वो बताया जो तुम नहीं जानते थे। और तुम पर ईश्वर की कृपा बहुत है।" (कुरआन 4:105-113)

ये छंद एक ऐसी स्थतिकी व्याख्या करते हैं जसिमें मदीना के मुस्लमि कबीले के एक व्यक्तने कवच का एक टुकड़ा चुरा लिया और उसे अपने यहूदी पड़ोसी की संपत्तिमें छपिा दिया। जब कवच के मालकिों ने उसे पकड़ा, तो वो बोला की उसने ये काम नहीं कयिा है, और वह कवच यहूदी व्यक्तके पास मलिा। हालाँकि, यहूदी बोला कि उसके मुस्लमि पड़ोसी ने ये कयिा है और वह इसमें शामिल नहीं है। मुस्लमि कबीले के लोग पैगंबर से उसकी याचना करने गए, और पैगंबर ने उनका पक्ष लेना शुरू कर दिया, तभी उपरोक्त छंद आया और यहूदी व्यक्तको इस आरोप से मुक्त कर दिया गया। यह सब तब हुआ जब यहूदी मुहम्मद के पैगंबर होने का इनकार करते थे! इन छंदों ने खुद पैगंबर मुहम्मद को धोखेबाजों का साथ न देने का नरिदेश दिया! छंद:

"...और धोखेबाजों के वकील न बनो और ईश्वर से उनके लिए क्षमा न मांगो... और यदतिम पर ईश्वर की कृपा और उसकी दया नहीं होती तो इनमे से एक समूह ने तुम्हें बहकाने का नश्चिचय ही कर लिया था।"

यदि मुहम्मद ने स्वयं कुरआन की रचना की होती तो एक झूठा, धोखेबाज होने के नाते वो यह सुनश्चिति करते कि इसमें कुछ ऐसा न हो जसिसे उनके अनुयायियों और समर्थकों की संख्या कम हो जाये। तथ्य यह है कि कुरआन, विभिन्न अवसरों पर, कुछ मुद्दों पर पैगंबर को फटकार लगाता है जसिमें उन्होंने गलत नरिणय लिया था, यह अपने आप में एक प्रमाण है कि यह उनके द्वारा नहीं लिखा गया था।

फुटनोट:

[1]

मार्टिनि लुगिस द्वारा लिखित "मुहम्मद: प्रारंभिक स्रोतों पर आधारित उनका जीवन", पृष्ठ 34

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/338>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।